NBT
नवभारत टाइम्स
महानगर > मुंबई > बुधवार, 21 मई 202

या subscribe.timesofindia.co

पानी आपूर्ति में असमानता बरत रही है BMC : प्रजा

■ NBT रिपोर्ट, मुंबई: मंगलवार को प्रजा फाउंडेशन ने बीएमसी द्वारा दी जा रही सुविधाओं, समस्याओं और उनके निवारण से संबंधित एक रिपोर्ट साझा की। रिपोर्ट के अनुसार, पानी आपूर्ति के मामले में बीएमसी स्लम और गैर-स्लम इलाकों में भारी असमानता बरत रही है। जहां गैर-स्लम क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 135 लीटर पानी की आपूर्ति होती है, वहीं स्लम में सिर्फ 45 लीटर पानी मिलता है। रिपोर्ट के अनुसार, सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति भी बदतर है। पेज 2

स्लम में 45, गैर-स्लम में 135 लीटर पानी की आपूर्ति

प्रजा की रिपोर्ट: स्लम क्षेत्रों में BMC कर रही है भारी भेदभाव

AI Image

■ NBT रिपोर्ट, मुंबई: महानगर में जल आपूर्ति प्रणाली में गंभीर असमानताएं सामने आई हैं। प्रजा फाउंडेशन की रिपोर्ट के अनुसार, स्लम में रहने वालों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि उन्हें प्रतिदिन प्रति व्यक्ति सिर्फ 45 लीटर पानी मिलता है, जबकि गैर-स्लम क्षेत्रों में 135 लीटर पानी की आपूर्ति होती है। ऐसे में स्लम में रहनेवाले लोगों को टैंकर के भरोसे रहना पड़ता है और पैसे खर्च करने पड़ते हैं।

मंगलवार को प्रजा फाउंडेशन ने बीएमसी द्वारा दी जा रही सुविधाओं, समस्याओं और उनके निवारण से संबंधित एक रिपोर्ट मीडिया के साथ साझा की। रिपोर्ट के अनुसार, शहर को प्रतिदिन 4370 मिलियन लीटर पानी प्राप्त होता है, लेकिन पाइपलाइन में रिसाव के चलते केवल 3975 मिलियन लीटर पानी ही मुंबईकरों तक पहुंचता है। प्रजा फाउंडेशन के सीईओ मिलिंद म्हस्के ने बताया कि मुंबई की जल आपूर्ति प्रणाली उपलब्ध जल संसाधनों और उनके वितरण के बीच भारी असंतुलन है।

स्लम इलाकों में टैंकर के लिए चुकाने पड़ते हैं औसतन 750 रुपये

आवास और शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार, एक व्यक्ति को रोजाना औसतन 135 लीटर पानी मिलना चाहिए। प्रजा की रिपोर्ट के अनुसार नॉन स्लम क्षेत्रों में तो इतना पानी मिल रहा है, लेकिन स्लम क्षेत्रों में सिर्फ 45 लीटर पानी मिलता है। इस असमान आपूर्ति के कारण स्लम के लोग महंगे निजी टैंकरों पर निर्भर हैं, जिनके लिए उन्हें लगभग 750 रुपये प्रति माह चुकाने पड़ते हैं। इसके विपरीत, मीटर धारी उपभोक्ता केवल 25.76 रुपये प्रति माह भुगतान करते हैं। बीएमसी का 24x7 जलापूर्ति का वादा अब तक पूरा नहीं हो सका है। 2024 में शहर के केवल 8% क्षेत्रों को ही चौबीसों घंटे पानी मिल पाया, जबकि 71 फीसदी क्षेत्रों में लोगों को दिन में चार घंटे या उससे भी कम समय के लिए पानी मिला। मिलिंद ने बताया कि इस समस्या के निवारण के लिए अफोर्डेबल हाउसिंग पर जोर देना होगा, ताकि यह असमानता कम हो सके।

सार्वजनिक शौचायलों की स्थिति चिंताजनक

■ NBT रिपोर्ट, मुंबई: मुंबई में सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति चिंताजनक है। प्रजा फाउंडेशन की ताजा रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि शहर में सामुदायिक शौचालयों पर स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के मानदंडों की तीन गुना से भी अधिक भीड़ है। प्रजा द्वारा आरटीआई से प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार, वर्ष 2023 में कुल 6800 शौचालय में से 3827 में बिजली और पानी का कनेक्शन नही था।

एक नज़र में SBM की स्थिति

- मुंबई में सार्वजनिक शौचालयों पर भारी बोझ
- स्वच्छ भारत मिशन मानदंडों से तीन गुना अधिक उपयोगकर्ता
- शौचालय की एक सीट का औसतन 86 पुरुष और 81 महिलाएं कर रहे उपयोग। यह संख्या 35 और 25 होनी चाहिए।
- शौचालय में 4 में से केवल 1 सीट महिलाओं के लिए
- 69% शौचालयों में पानी नहीं और 60% बिजली से वंचित